eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 09, September 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.23635063

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और लोकतंत्र

विवेक सिंह[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, भारतीय महाविद्यालय फर्रुखाबाद

Received: 21 June 2026 Accepted & Reviewed: 25 September 2026, Published: 30 Septemper 2026

Abstract

लोकतंत्र शासन की एक प्रणाली के साथ–साथ जीवन की एक शैली है। लोकतंत्र आम सहमति, विचार–विमर्श, सहनशीलता एवं आत्मनियंत्रण के आधार पर काम करता है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की सबसे बड़ी खूबी यह रही है कि इस आंदोलन की प्रकृति मूलत अहिंसक रही है। साम्राज्यवादी शक्ति और विदेशी आधिपत्य से मुक्ति के वैश्विक आंदोलनो में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन केवल मुक्ति का आंदोलन ही नहीं, बल्कि भारतीय समाज में आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों, चेतना और संस्थाओं के निर्माण की प्रक्रिया का भी आंदोलन भी था।

कीवर्ड: लोकतंत्र, विचार–विमर्श, आत्मनियंत्रण, अहिंसा, लोकतान्त्रिक मूल्य।

Introduction

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने नागरिक अधिकारों, जन– भागीदारी, समानता तथा प्रतिनिधित्व की चेतना का भी विकास किया। अतः आधुनिक लोकतंत्र की जड़ें हम भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में देख सकते हैं। ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध लड़ते भारतीय जनता ने आम समिति से शासन करना सीखा, जन–सहमति से सार्वजनिक विवादों को हल करना सीखा, साथ ही सत्ता पर जन–नियंत्रण के महत्व एवं उपयोगिता को भी सीखा। राज सत्ता के शोषण, अन्याय एवं अत्याचार से रक्षा के लिए राजनीतिक अधिकारों की मांग की। राजनीतिक अधिकारों से अपनी स्वतंत्रता को संरक्षित करना सीखा। इस प्रकार भारतीय आंदोलन एवं लोकतंत्र एक दूसरे के पूरक हैं। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने भारत में लोकतंत्र की जड़े जमाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने किस प्रकार भारत में लोकतंत्र को स्थापित करने में किस प्रकार अपनी भूमिका निभाई है इसका अवलोकन हम निम्न बिंदुओं के अंतर्गत कर सकते हैं

(1) उपनिवेशवादी शासन और लोकतांत्रिक चेतना का उद्भव : भारतीय जनता के शोषण और भारतीयों पर अन्याय का एक कारण यह भी था कि भारत पर शासन करने वाली ब्रिटिश सत्ता का केंद्र लंदन था। कहने का मतलब ब्रिटिश शासक जो भारत पर शासन कर रही थी वह रहती थी 'लंदन' में। भारत और ब्रिटेन की दूरी 6000 मील से अधिक था, अर्थात ब्रिटिश शासन भारतीय जनता से 6000 मील दूर थे। उन्हें भारतीयों पर हो रहे अन्याय, शोषण एवं अत्याचार की जानकारी सही और सही समय पर नहीं मिल पाती थी। कहने का मतलब यह है कि भारत में ब्रिटिश सत्ता की प्रकृति मूलत अलोकतांत्रिक ही रही। बिना भारतीय जनता की सहमति से ही सारे निर्णय लिए जाते थे। ब्रिटिश सत्ता के अलोकतांत्रिक प्रकृति होने के बावजूद भी जाने अनजाने में ब्रिटिश सत्ता द्वारा चाहे अपने ही हित साधन के लिए, कुछ ऐसे कार्य किए गए जिसके परिणाम भारत में लोकतांत्रिक चेतना के विकास में सहायक हुए, जैसे– आधुनिक शिक्षा प्रणाली, कानून का शासन, प्रशासनिक एकरूपता और प्रेस व मुद्रण का विकास।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 09, September 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.23635063

आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने भारत में नई शिक्षा को दिशा दी। अपनी शिक्षा व्यवस्था एवं शैक्षिक मूल्यों पर गर्व करना सिखाया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि दुनिया में हो रहे परिवर्तनों को हम स्वीकार नहीं करना चाहते थे, बल्कि दूसरे देशों से पढ़ लिख कर लौटे भारतीयों ने भारतीय शैक्षिक व्यवस्था को आधुनिक बनाने का काम किया। राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था दम तोड़ रही थी। व्यक्ति के शासन की जगह 'विधि का शासन' प्रणाली का जन्म हो रहा था। आधुनिक ढंग से लिखित संविधानों के द्वारा शासन प्रशासन का संचालन करने के युग की शुरुआत हो रही थी। इसका प्रभाव भारतीयों पर भी पड़ा। भारत में भी कानून के शासन की प्रणाली की शुरुआत हुई। भारत के राजनीतिक इतिहास को देखने से विदित होता है कि भारत राजनीतिक रूप से विभाजित रहा। अंग्रेजों के शासन ने भारत में प्रशासनिक एकरूपता को लाकर भारतीय राष्ट्र के एकीकरण में मदद किया। भारत में राजनीतिक चेतना और लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास में सबसे ज्यादा भूमिका अगर किसी की रही तो वह था –प्रेस और मुद्रण का विकास। समाचार पत्रों और स्वतंत्र पत्रकारो, कवियों और लेखकों ने भारत में राजनीतिक चेतना को जगाने में महती भूमिका निभाई। इन सब व्यवस्थाओं का प्रभाव यह पड़ा कि भारत में एक पढ़े–लिखे मध्यम वर्ग का उदय हुआ और इसी मध्यम वर्ग ने आगे चलकर के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की मशाल को अपने हाथ में लिया और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया।

(2) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उद्भव एवं लोकतंत्र का विकास :1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन हुआ। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना स्वयं में भारतीय लोकतांत्रिक आंदोलन के इतिहास की मील का पत्थर बनी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रारंभिक चरित्र संवैधानिक, शांतिपूर्ण एवं लोकतांत्रिक था। यह इस बात से प्रमाणित होता है कि प्रारंभ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रमुख मांगे– विधान परिषदों का विस्तार करके भारतीयों को भी इसमें जोड़ा जाए, बजट पर चर्चा करने, सदन में भारतीयों को बोलने एवं मतदान का अधिकार दिया जाए, प्रशासन में भारतीयों को भागीदारी दी जाए और विचार, मत व अभिव्यक्ति की आजादी और प्रेस को स्वतंत्रता दी जाए, थी। स्पष्ट रूप से यह मांगे लोकतांत्रिक अधिकारों से जुड़ी थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का यह प्रयास रहा की याचिकाओं, प्रस्तावों एवं अनुनय– विनय के माध्यम से भारतीय जनों को राजनीतिक प्रक्रिया से जोड़ा जाए।

(3) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अंतर्गत नरमपंथ और गरमपंथ का उदय :भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का चरित्र मूलतः 1885 से लेकर 1905 तक नरमपंथी रहा। दादा भाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता जैसे बड़े नेता नरमपंथी विचारधारा का नेतृत्व कर रहे थे। इनका मानना था कि लोकतांत्रिक अधिकारों को शांतिपूर्ण एवं संवैधानिक तरीकों से ही प्राप्त किया जा सकता है। नरमपंथी नेताओं ने ब्रिटिश आर्थिक शोषण की आलोचना की। जनता के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने तथा प्रतिनिधि शासन की मांग उठाई। जनता को राजनीतिक रूप से शिक्षित करने तथा उनमें राजनीतिक चेतना जगाने का काम किया ।

कांग्रेस के भीतर ही गरमपंथी विचारधारा का जन्म 1905 से हुआ माना जाता है। जो 1918 तक चला। गांधी युग के आगमन के पूर्व तक इस विचारधारा का नेतृत्व कर रहे थे– तिलक, लाला लाजपत राय और विपिन चंद्र पाल। इन नेताओं ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को याचिका, प्रस्ताव और विचार–विमर्श के चरित्र से निकालकर जन आंदोलन की ओर ले गए। तिलक ने नारा दिया– 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे मैं लेकर रहूंगा' । यह लोकतंत्र की मूल भावना 'जनता का शासन' को दर्शाता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 09, September 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.23635063

स्वदेशी व बहिष्कार के आंदोलन ने जनता की भागीदारी एवं सक्रियता को बढ़ाया। जो लोकतंत्र का आधार है।

(4) गांधी युग का आगमन एवं लोकतंत्र का विस्तार : महात्मा गांधी के भारत आगमन (1915) तथा गांधी जी की भारतीय राजनीति में प्रवेश (1917) के साथ ही केवल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का चरित्र ही नहीं बदला अपितु, लोकतंत्र के आंदोलन को भी व्यापक सामाजिक आधार मिला। गांधी जी के विचारों एवं जन आंदोलन की रणनीति का आधार स्तंभ रहे– 'सत्य' एवं 'अहिंसा' । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से गांधी जी ने इन सनातन मानव मूल्यों को बतौर जन आंदोलन के हथियार के रूप में प्रयोग किया। परिणाम स्वरूप इससे जनता की भागीदारी बढ़ी। साथ ही इन दो अमोघ हथियारों से गांधी जी ने राजनीति को नैतिक धरातल पर खड़ा किया। राजनीति को सत्ता के खेल, छल– प्रपंच से बाहर निकाला। ज्यादा से ज्यादा आम जनमानस को इससे जुड़ने का आह्वान किया। गांधी जी के इन प्रयासों ने भारतीय समाज में समानता एवं सामाजिक न्याय को प्राप्त करने की अलख जगा दिया।

(5) गांधी युग और असहयोग आंदोलन: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से असहयोग आंदोलन का नेतृत्व किया – महात्मा गांधी ने। इस आंदोलन का उद्देश्य था ब्रिटिश शासन– प्रशासन के साथ असहयोग करके ब्रिटिश राज को नैतिक रूप से कमजोर बनाना एवं पंगु करना। इस आंदोलन की रणनीति का हिस्सा रहे– सरकारी स्कूलों, अदालतों और विदेशी वस्त्रो का बहिष्कार करना। यह आंदोलन जन– सहमति एवं भागीदारी से सफलतापूर्वक चलाया गया। इससे लोकतंत्र को व्यापक सामाजिक आधार मिलना शुरू हुआ। पहली बार किसान, मजदूर, महिलाओं और छात्रों ने बड़ी संख्या में इस आंदोलन में शामिल हुए। इससे लोकतंत्र की मूल भावना 'जनसत्ता' मजबूत हुई। आम जनमानस को अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों का बोध हुआ। उनमें राजनीतिक चेतना जागृत हुई। गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के आधार पर विरोध का जो मार्ग दिखाया, वह लोकतंत्र के मूल्य से मिलता–जुलता था। स्वराज की मांग में जनता को आत्म निर्णय के अधिकार से परिचित कराया आत्मनिर्णय का अधिकार लोकतंत्र का आधार है स्वराज और बहिष्कार की अवधारणा एवं आंदोलन ने जनता को यह विश्वास दिलाया कि जनता संगठित होकर किसी भी अन्याय शोषण एवं अत्याचारी शासक को चुनौती दे सकती है।

(6) गांधी युग एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन: गांधी जी के नेतृत्व में ही सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत होती है 1930 में, गांधी जी के नमक कानून के खिलाफ दांडी मार्च से। सविनय अवज्ञा का अर्थ होता है– विनयपूर्वक और शांतिपूर्ण ढंग से गलत और मनमाने कानूनों का विरोध करना, उसकी अवहेलना करना। गांधी ने इस आंदोलन को चलाकर यह सिद्ध किया कि अन्यायपूर्ण कानून का विरोध करना नागरिकों का अधिकार है एवं परम कर्तव्य है। इस आंदोलन में बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। जिससे भारतीय लोकतंत्र में लैंगिक समानता की भावना मजबूत हुई। चूंकि सविनय अवज्ञा आंदोलन का चरित्र शांतिपूर्ण एवं वैधानिक था, इसलिए इस आंदोलन को वैश्विक समर्थन हासिल हुआ। जिससे भारतीय स्वतंत्रता की मांग को वैधता मिली।

(7) गांधी युग एवं भारत छोड़ो आंदोलन: जब दुनिया में द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ, इसी समय 1942 में गांधी जी ने 'करो या मरो' का नारा देकर ब्रिटिश राज की ताबूत में अंतिम कील भारत छोड़ो आंदोलन शुरू करके ठोक दिया। यह अंतिम जन आंदोलन था। जो तभी रुकना था, जब भारतीयों को स्वतंत्रता एवं

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 09, September 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.23635063

आजादी का लक्ष्य प्राप्त हो जाए। चूंकि इस आंदोलन के शुरू होते ही प्रथम पंक्ति के सभी बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए, नजरबंद या जेल में बंद कर दिए गए। परिणामस्वरुप स्थानीय स्तर पर नए नेतृत्व का जन्म हुआ। जिन्होंने बड़े हिम्मत एवं साहस से भारत छोड़ो आंदोलन की जंग को जारी रखा। इस आंदोलन में व्यापक स्तर पर छात्रों– विद्यार्थियों ने भाग लिया। जिससे राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ हुई। व्यापक विरोध ने ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंका।

(8) सामाजिक सुधार आंदोलन और लोकतंत्र: भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का प्रारंभिक चरित्र भले ही राजनीतिक था, लेकिन जैसे–जैसे यह आगे बढ़ा वैसे–वैसे इसका दायरा सामाजिक सरोकारों वाला भी होता चला गया, जैसे– छुआछूत का विरोध करना, महिला शिक्षा और अधिकार, दलित उत्थान तथा सांप्रदायिक सौहार्द भी इसके उद्देश्य बन गए और इसके लिए भी आंदोलन तेज किया गया। डॉ भीमराव अंबेडकर, ज्योतिबा फुले, पेरियार, सरोजिनी नायडू जैसे नेताओं ने लोकतंत्र को सामाजिक समानता से जोड़ा। यह बताया गया कि राजनीतिक स्वतंत्रता तब तक स्थाई नहीं होगी, जब तक सामाजिक समानता न स्थापित हो।

(9) क्रांतिकारी आंदोलन और लोकतंत्र: गरमपंथी विचारधारा एवं नेतृत्व ने आगे चलकर क्रांतिकारी आंदोलन की नींव रखी। क्रांतिकारी आंदोलन की लहर को आगे बढ़ा रहे थे– छात्र एवं नवयुवक, जैसे– भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव, अशफाकउल्ला खा, रोशन सिंह, जतिन दास आदि। इस आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक नया मूल्य जोड़ा वह था– 'समाजवाद'। इनका मानना था कि बिना आर्थिक समानता के राजनीतिक लोकतंत्र टिकेगा ही नहीं। बिना आर्थिक समानता के राजनीतिक लोकतंत्र खोखला होगा। यह कुछ अमीरों और शक्तिशाली लोगों का लोकतंत्र होगा। एक बहुत बड़ा वर्ग लोकतंत्र के लाभों एवं अवसरों से वंचित रह जाएगा। इनका मानना था कि आजादी की लड़ाई का लक्ष्य मात्र सत्ता परिवर्तन करना नहीं था, बल्कि शोषण मुक्त समतावादी समाज की स्थापना था। इन लोगों ने जनसत्ता, समाजवाद और नागरिक स्वतंत्रता का समर्थन किया।

(10) ब्रिटिश भारत के अधिनियम और लोकतंत्र: ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश सरकार द्वारा कई अधिनियम ले गए थे जैसे– 1909, 1919 तथा 1935 का अधिनियम आदि। भले ही ये अधिनियम ब्रिटिश साम्राज्य की सहूलियतों के लिए लाए गए थे, लेकिन इन अधिनियमों ने चुनाव, प्रतिनिधित्व और प्रांतीय स्वशासन से भारतीयों को परिचित कराया और इसकी प्रक्रिया का अंग बनाया। 1937 के प्रांतीय चुनाव ने भारतीयों को शासन चलाने का व्यावहारिक अनुभव का अवसर दिया। जो स्वतंत्र भारत के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ।

(11) संविधान निर्माण और लोकतांत्रिक मूल्य व संस्थाओं का विकास: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की मंजिल थी अपने देश के लिए स्वयं के संविधान का निर्माण करना। संविधान सभा स्वयं में एक लोकतांत्रिक संस्था थी। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से जो लोकतांत्रिक मूल्य व आदर्श निकले वह थे– मौलिक अधिकार, सार्वभौम वयस्क मताधिकार, धर्मनिरपेक्षता, संघीय व्यवस्था,तथा सामाजिक न्याय आदि। इन्हीं मूल्यों के आधार पर भारतीय लोकतंत्र को आगे का सफर करना था। इन्हीं मूल्यों व आदर्शों के आधार पर भारतीय लोकतंत्र की जो विशेषता उभरी वह यह है– विविधता में एकता, बहुदलीय व्यवस्था, शांतिपूर्ण सत्ता परिवर्तन तथा स्वतंत्र

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED, INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 09, September 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.23635063

न्यायपालिका। यह सभी विशेषताएं राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अंकुरित व विकसित हुई। जिसे विभिन्न विचारधाराओं के सह:अस्तित्व ने खींचा था।

निष्कर्ष स्वरूप, हम कह सकते हैं कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और लोकतंत्र एक ही ऐतिहासिक प्रक्रिया के दो पहलू रहे हैं। राष्ट्रीय आंदोलन ने भारतीय जनमानस को नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया, सत्ता में भागीदारी का अभ्यास कराया, राजनीतिक चेतना को जागृत किया, समानता और न्याय के आदर्श से परिचित कराया। यह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की ही खूबी रही है कि स्वतंत्रता के बाद भारत ने लोकतंत्र को अपनाया, उसे आगे बढ़ाया। आज भारतीय लोकतंत्र तमाम चुनौतियों की बाधा को पार करते हुए जीवंत है, स्थिर है। इसकी जीवंतता व स्थिरता का प्रमाण है कि– जनता सर्वोच्च है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. India's Struggle for Independence – बिपिन चंद्र

2.India Since Independence – बिपिन चंद्र

3.The Discovery of India – जवाहरलाल नेहरू

4.Freedom Struggle in India – ताराचंद

5.Modern India – सुमित सरकार

6.Indian National Movement –शेखर बंद्योपाध्याय

7.Hind Swaraj – महात्मा गांधी

8.Annihilation of Caste – डॉ. भीमराव आंबेडकर

9.Indian Constitution: Cornerstone of a Nation – ग्रैनविल ऑस्टिन

10.politics in India – राजनी कोठारी